SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

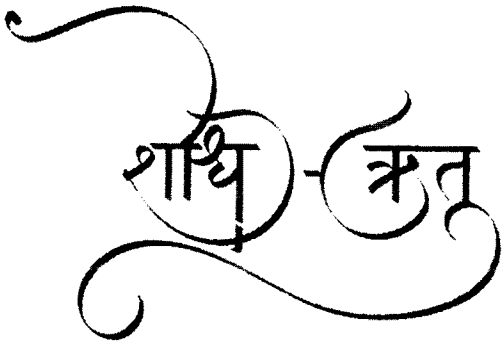

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

Open Transparent PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

'साहित्य, समाज और संस्कृति' ई-विशेषांक

ISSN-2454-6283 **02 March,2023** IMPACT FACTOR - **IIJIF-8.712**

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक-डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

तकनीकी सम्पादक-अनिल जाधव, मुंबई

अतिथि सम्पादक

प्रा.डॉ.संतोष येरावार,
हिंदी विभाग प्रमुख,
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
प्रा.डॉ.व्यंकट खंदकुरे,
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

ई-विशेषांक मार्गदर्शक

डॉ.मोहन खताळ,
प्रधानाचार्य, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
डॉ.अनिल चिद्रावार,
उप प्रधानाचार्य, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

पत्राचार हेतु पता-

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड-431605

प्रकाशन / प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार
पब्लिकेशन, नांदेड–महाराष्ट्र

मुद्रण / मुद्रक
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

मेल पता shodhrityu78@yahoo.com
वेबसाइट www.shodhritu.com

"शोध–ऋतु ' तिमाही पत्रिका में आलेख लेखक निम्न बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें ।
फॉण्ट–कृति देव 10 वर्ड फाइल में ही सामग्री स्वीकृत की जायेगी ।
आलेख पेज की मर्यादा चार पेज होगी ।
आलेख विशेषज्ञों द्वारा चयन किये जायेंगे ।
चयनित आलेख की सूचना मेल द्वारा आलेख लेखक को दी जायेगी ।
चयनित आलेख के लिए 1000रु प्रोसेसिंग शुल्क लिया जायेगा ।
लेखक मौलिक शोधपरक एवं वैचारिक आलेख ही भेंजे ।
व्हाट्स एप–9405384672

PhonePe
ACCEPTED HERE
Scan & Pay Using PhonePe App

or Pay to Mobile Number using PhonePe App
9405384672
Sunil Jadhav

बैंक विवरण

NAME	SUNIL GULABSING JADHAV
BAINK	BANK OF MAHARASHTRA, WORKSHOP CORNER, NANDED, MAHARASHTRA
ACCOUNT NO.	2015 8925 290
IFSC CODE	MAHB0000720

Principal
Shivaji College, Hingoli
Ta.Dist.Hingoli (MS)

वार्षिक परामर्श मंडल (2023)

- प्रो .डॉ.रामप्रसाद भट, हैम्बुर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
- प्रो.डॉ.रंजित उपुल, केलनिया विश्वविद्यालय, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.रिदिमा निशादिनी लंसकारा, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.अनुषा सल्वाथुरा, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.नुर्मातोव सिराजोद्दीन, उज्बेकिस्तान
- सौ.सविता तिवारी, मॉरिशस
- प्रो.डॉ.मक्सीम देम्चेंको, मास्को, रशिया
- प्रो.डॉ.हिदायतुल्लाह हकीमी, जलालाबाद, अफगानिस्तान
- प्रो.हुरुई,उप–संकायाध्यक्ष,अफ्रीकी–एशियाई भाषा एवं संस्कृति संकाय क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, चीन
- प्रो.विवेक मणि त्रिपाठी, चीन

Principal
Shivaji College, Hingoli
Ta.Dist.Hingoli (MS)

- प्राचार्य डॉ.आर.एन.जाधव,पीपल्स कॉलेज,नांदेड
- प्र.उपकुलपति डॉ.जोगेन्द्रसिंह बिसेन, स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय, नांदेड
- प्रो.डॉ.मुकेशकुमार मालवीय, हिन्दू बनारस विश्वविद्यालय,बनारस
- प्रो.डॉ.राजेंद्र रावल,राजकोट,गुजरात
- प्रो.डॉ.अरविंद शुक्ल,उत्तर प्रदेश
- प्रो.डॉ.संगम वर्मा,पंजाब
- प्राचार्य.डॉ.राजेन्द्र प्रसाद,प्रतापगढ
- प्राचार्य डॉ.प्रवीण कुमार सक्सेना, गांगड़तलाई,राजस्थान

- प्रो.डॉ मंगला रानी, पटना
- प्रो.डॉ.पठाण रहीम, हैदराबाद
- प्रो.डॉ.श्यामराव राठोड, तेलंगाना
- प्रो.डॉ.भारत भूषण, पंजाब
- प्रो.डॉ.परिमल अम्बेकर, गुलबर्गा
- प्रो.डॉ.ओमप्रकाश सैनी, हरियाणा
- प्रो.डॉ.लक्ष्मी गुप्ता,यमुनानगर,हरियाणा
- प्रो.डॉ.शबाना दुर्यानी, (उर्दू) नांदेड़

–[1]उर्मिला पाटील [2]गजानन वानखेडे 196
52.पर्यावरणीय समस्याओं का मूल कारण: एक तात्विक निरीक्षण 201
–डॉ.संजय पाटील 201
53.धरती आबा नाटक का सामाजिक सरोकार..... 204
–सतिश शामराव मिराशे..... 204
54.हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री लेखन..... 208
–प्रा.डॉ.सुनिल एस.कांबळे..... 208
55.मन्नू भंडारी के साहित्य में महानगरीय जीवन की समस्याएँ..... 212
–[1]वृषाली महादेव माळी, [2]डॉ.वर्षाराणी निवृत्तीराव सहदेव..... 212
56.शरद जोशी के नाटकों में सामाजिक चेतना..... 214
–[1]प्रा संतोष विजय येरावार, [2]प्रा शंकर रामभाऊ पजई..... 214
57.ग्रामांचलिक नारी का परिवारिक जीवन..... 218
–प्रा.दयाशंकर यादव..... 218
58.साहित्य, समाज, और संस्कृती..... 221
–डॉ. सुजितसिंह शि. परिहार..... 221
59.'किसान की आत्महत्या और हत्या कहानी'..... 225
–प्रा.डॉ.पवन नागनाथ एमेकर..... 225

Principal
Shivaji College, Hingoli

54.हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री लेखन

–प्रा.डॉ.सुनिल एस.कांबळे
हिंदी विभाग,शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली

पृष्ठभूमि : नारी प्रकृति की अनुपम देन है। सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करने वाली रणरागीनी है। समाज का गौरव, त्याग और समर्पन करनेवाली समर्पीनी है। नारी एक अच्छी गृहीणी, माँ, पत्नी होते हुए एक आत्मनिर्भर नारी है। अपने लिए कम और दूसरों के लिए जिनेवाली होती है। घर एवं परिवार की पूरी जिम्मेदारियाँ सुबह से लेकर रात तक बिना थके सब की सेवा में रत सिर्फ नारी ही होती है। उसे किसी भी प्रकार का मोह नहीं होता। आधुनिक परिवेश में नारी शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बन रही है।

उद्देश : 1.समाज व्यवस्था में नारी की स्थिति एवं सामाजिक परिवेश का जिक्र करना. 2.प्रताडित नारी को समानता का हक एवं आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रवृत्त करना. 3.नारी के व्यक्तित्व में आये बदलाव को दर्शाना.

गृहितके :1.भारतीय समाज व्यवस्था में हिंदी कहानी में नारी का अस्तित्व और यथार्थता. 2.हिंदी कहानिकारों द्वारा नारी का यथार्थ जीवन का चित्रण.

संशोधन पध्दती :प्रस्तुत शोधालेख में तथ्य संकलन के द्वितीय तंत्र का अवलंब किया है। संकलित तथ्यों के गुणात्मक आधारपर वर्गीकरण करके वर्णनात्मक पध्दति के माध्यम से विश्लेषण किया गया है।

विषय प्रतिपादन :समकालीन नारी जीवन में परिवर्तन हो रहा है, साहित्य में नारी जीवन के विविध पहलूओं तथा समस्याओं को वाणी दे रही है। स्त्री अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। हिन्दी जगत में स्त्री लेखिकाएँ अस्तित्व की लड़ाई लढ़ रही है। संघर्षशील महिलाओं का चित्रण कथा साहित्य में कर रही है। आज के परिवेश में नारी अनेक संघर्षों से जूझ रही है एवं अपना अलग स्थान निर्माण कर रही है। आज हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श को लेकर काफी कुछ लिखा जा रहा है, नारी खुद के अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्ष कर इस व्यवस्था के विरोध में लढ़ रही है। नारी को अपने अधिकारों की जान–पहचान हो चुकी है। उसकी पीड़ा, अन्याय, अत्याचार सहते हुए समाज व्यवस्था से प्रतिप्रश्न कर रही है। नारी इस व्यवस्था के लिखाफ आवाज उठा रही है। तो भी उसका अपमान किया जा रहा है। इस संदर्भ में तसलीमा नसरीन कहती है–"स्त्री का दमन करनेवाली तमाम तनों और शाखाओं को उखाड फेंकना, समाज की जड़पर चोट करना चाहती हूँ मै। जानती हूँ, इससे मुझे हानी होगी। मेरा समाज परिवार तहस–नहस हो जायेगा, मुझे लगातार जलील होना पड़ेगा। फिर भी यह जो खड़ी हूँ अकेली और निडर मैं इसी तरह अटल खड़ी रहूँगी। मेरे हाथ में दो चिजें है साहस और सच्चाई।"[1]

भारतीय संविधान में डॉ. भिमराव आम्बेडकर जी ने भले ही स्त्री–पुरूष समानता का अधिकार दिया हो लेकिन यथार्थ में वह नहीं मिल पाया है। नारी का दर्द एवं पीड़ा की स्थिती भयानक है। यदि स्त्रियों को कुछ अधिकार दिये भी गए हो तो वे अमूर्त रह गए वे सदियों और पूर्वग्रहों के कारण व्यावहारिक जगत में लागु नहीं किये जा सकते। इसलिए अब भी स्त्री की पूरी पकड दुनियापर नहीं है। स्त्री–पुरूष समान है ऐसा ढिंढोरा पिटा जाता है लेकिन वास्तव में कुछ और ही है। स्त्री चेतना के विभिन्न आयाम मृदूला गर्ग की कहानियों में पाये जाते है। दाम्पत्य संबंध, आर्थिक स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता परम्परा और रूढियों के प्रति विद्रोह, स्वनिर्णय की क्षमता, विवाह के प्रति नई दृष्टि आदि उनके कहानियों के कथ्य के रूप में अभिव्यक्त हुए है। मृदुला गर्ग ने हरी बिंदी, एक और

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

विवाह, अवकाश, अगर यों होता, वितृष्णा, बाहरी जन कितनी कैद आदि कहानियाँ लिखी है।

'हरी बिंदी' कहानी की अनाम युवती अपने अस्तित्व एवं स्वतंत्र के प्रति सजग होकर पति के गैर मौजुदगी में पराये पुरूष के साथ फिल्म देखने चले जाती है दिनभर घूमती है। बिना किसी तनाव एवं दबाव से मुक्त रहती है। स्त्री की सक्रीयता एव सबलता दिखाती है। 'बाहरी जन' कहानी की बहू नंदिनी और उसकी सास सरीता जिसके विचार ऊँचे है। वह परम्परा को तोडती है, रूढ़ीवादी नहीं है। वह स्त्री स्वतंत्र की पक्षधर है। बहु से निःसंतान होने से गुस्साए अपने पति राजेश्वर से कहती है–"नहीं चाहिए उसे बच्चा, नहीं जायेगी वह डॉक्टरों के पास नहीं करेगी अप्राकृतिक प्रक्रिया का इस्तेमान उसकी गोद भरे न भरे? निर्णय लेने का अधिकार उसका है। सिर्फ उसका।"[2]समाज में होनेवाली अलग–अलग गतिविधियों को साहित्यकार अपनी रचनाओं मे मुखरित करने का प्रयास करता रहता है। ममता कालिया ने भी अपनी कहानियों में समस्याओं का चित्रण किया है। उनमें युवक एवं युवती, नारी समस्या, दहेज समस्या, अवैध संबंध समस्या भ्रष्टाचार समस्या, आदि समस्याओं को ममता जीने रचनाओं में चित्रित किया है।

ममता कालिया ने अपनी कहानियों में यथार्थ रूप में चित्रित किया है। आज नारी उत्पीड़न से मुक्त नहीं हुई है। 'बोलनेवाली औरत' कहानी में सही चित्रण हुआ है। विवाह के बाद ससूराल जाने पर कई औरतें पति और सास के बीच खिंचतान में तनाव ग्रस्त होती है। अपनी भावना एवं विचारों को विवशता में मन–ही–मन कुढ़ती है। घर के खराब माहौल के कारण मशीन की तरह जीवन बिताने के लिए विवश होती है। 'बिटियाँ' कहानी में दहेज समस्या का चित्रण इन शब्दों में किया–"और तो सब ठिक है सक्सेना साहब, बस लडके ने अपने हाथ से आपकी लिस्ट में दो–तीन छिटपुट चीजें लिख दी है। उन्हें भी शामील कर दे, तो लडके का मन रह जाएगा। ये सब तो आज–कल आम चिजें है। स्कूल मास्टर तक दिया करते है। फिर आप तो बकायदा सरकारी अफसर है। बीरेश्वर बाबु ने कागज पर नजर डाल दी। वे छिट–पूट चिजें थी स्कूटर. फ्रिज और टेलीवीजन।"[3]

समाज में जगह–जगह नारी के साथ छल किया जाता है, आधुनिक नारी संक्रमण स्थिति से गुजर रही है। नैतिकता के नाम पर उसकी आवाज दबाई जा रही है। आज की महिलाओं में प्रेम और स्नेह करनेवाली महिला सबको स्विकार्य है लेकिन महत्वाकांक्षा पुर्ति के लिए संघर्ष कर रही महिला उन्हें नहीं चाहिए। फिर भी वह समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में योगदान दे रही है।

मालती जोशी जी ने अपने साहित्य में मध्यमवर्गीय समाज के द्वंद्वों का भी वर्णन किया है। 'दुसरी दुनिया' कहानी में द्वंद्वों की छटपटाहट और जीवन में होनेवाली छोटी–छोटी घटनाओं को संबंधों के स्तर पर महत्व कैसे प्राप्त होता है यह दिखाया है–"आज के समाज में पैसा ही सबकुछ है, जिसके पास आर्थिक संपन्नता है, समाज में उनका सम्मान भी है, पैसे के अभाव में समाज क्या सगे रिश्ते भी बदल जाते है। यह कहानी आर्थिक तंगी में ग्रस्त सुषमा नामक परिवार के सभी लोगों की दृष्टि भी बदल जाती है। और ऐसे वातावरण में वह स्वंय को बड़ा अपमानित महसूस करती है। सुषमा सबकुछ कर सकने में समर्थ होते हुए भी अपमानजनक जिंदगी जीने को मजबुर है–"आर्थिक तंगी में रिश्ते भी बदल जाते है–"भाभी जी द्वारा दो–दो के नोट देने पर वह सन्न रह सोचती है– क्या यही औकात रह गई है उसकी?"[4]

नारी चेतना के विभिन्न आयाम मृदुला गर्ग के कहानियों में दृष्टिगत होते है। निर्णय लेने की क्षमता,

Principal
Shivaji College, Hingoli
Ta.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

रूढी परम्पराओं के प्रति विद्रोह आत्मनिर्भर आर्थिक स्वतंत्रता पारिवारिक संबंध, विवाह के प्रति बदली सोच बला सोच एवं मातृत्व संबंधि नई सोच आदि उनकी कहानियों में उभरकर आया है। गर्ग जीने हरी बिंदी, एक और विवाह खरीददार रूकावट, बाहरी जान, अगर यो होता आदि कहानियों में यथार्थ वर्णन किया है। स्त्री सक्षमीकरण की दृष्टि से मृदुला गर्ग 'की रेशम' कहानी में हेमवती पति के मृत्यु के उपरांत सशक्त नारी के रूप में उभरती है। पति बाबुजी के होते हुए दमीत व्यक्तित्व को लेकर जीवन जिनेवाली हेमवती जिसकी घर में अवस्था एक पायदान के समान थी। पति मृत्यु के बाद नए एहसास और धैर्य से सबल व्यक्तित्व से होकर कहती है–"चलिए, उठ जाइए सब लोग शोक खत्म करो। दरी का लोना मोड दो। चाय बना लाओं सबके लिए। एक बार उठकर बैठ जाईए आप।"[5]

वैश्विकरण के इस दौर में नारी जीवन की महत्ता को लेकर काफी स्त्री–विमर्श हुआ है, कहानी साहित्य में इस प्रकार का प्रयास बींसबी सदी के अंतिम कुछ दशकों से हो रहा है, राजेंद्र यादव जी कहते है–"स्त्री–विमर्श 20वी सदी के उत्तरार्ध में ही आया है। यह स्त्री इतिहास और वर्तमान को एक स्वतंत्र अस्मिता देता है।"[6]

वर्तमान समाज में नारी आर्थिक आत्मनिर्भर होकर विवाह कर गृहस्थी संभालना अपना दायित्व मानती है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'सिस्टर' कहानी की नायिका सिस्टर डारोथी है जो अपने माता–पिता के लिए वह गृहस्थी जीवन बसाने का विचार छोड देती है और समाज के ताने–बाने का विरोध करते हुए सम्मान का जीवन जीती है–"अकेले आदमी को सुविधापूर्वक घर मकान में रहने का हक नहीं है क्या? अपने घर से किसी को परेशानी होगी? अकेली न रहे तो क्या करे? फॅमिली कहीं से किराए पर तो नहीं ला सकता।"[7]

भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था से प्रताड़ित नारी अन्याय का विरोध कर रही है उत्पीड़न के खिलाफ विद्रोह कर रही है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'केतकी' की नायिका केतकी भरी सभा में प्रधान गंधर्वसिंह से ललकारती है। उनके द्वारा अपने पर हुए बलात्कार का पर्दाफाश करती है–"आपका अंश मेरे गर्भ में है। मुझे तो आपका ही हाथ पकड़ना चाहिए।"[8]

नारी पुरूष के सामने अपनी गर्दन उठाने के लिए आतंकित भी, लेकिन विभिन्न आंदोलन के कारण नारी व्यवस्था के खिलाफ डटकर विद्रोह कर रही है। स्वरूपचंद गौतम की कहानी 'आजादी' की लडकी नथनी सोफ्टी के घर काम करती है, सोफ्टी कॉलेज जाती है, वह नथनी को हमेशा हीन समझकर उसका तिरस्कार करती है। कॉलेज में आरक्षण विरोधी आंदोलन में पुलीस का दंडा पडने पर सोफ्टी घर आकर नथनी पर वह गुस्सा उतारना चाहती है, तब नथनी का यह कथन उसके क्रोध को स्पष्ट करता है–सौफ्टी गाली मत देना। तुम्हारी गुलाम नहीं, मेहनत करती हूँ तब कुछ साले के टुकडे खाती हूँ, मेरा नालायक बाप न होता तो बेइज्जती की जिंदगी न बिताती, तेरी तरह कुछ बनकर दिखाती मेरी कौम को गाली मत देना। हम हलालखोर है, हरामखोर नही।"[4]

भारतीय नारी के व्यक्तित्व का विशेष पहलू है त्याग प्रारंभिक काल से आजतक नारी त्याग ही करती आयी है। कभी अपने माँ बाप के लिए कभी पति तो कभी अपने संतानों के लिए त्याग करनेवाली नारी ने अपने परिवार को सजाने के लिए बडे–बडे कष्ट उठाए है।

हिंदी साहित्य का मूल स्वर वेदना, नकार और विद्रोह ही रहा है, सदियों की वेदना और संताप व्यक्त करनेवाली विवेच्य कहानी नारी चेतना का दस्तावेज है। इन कहानियों में अभिव्यक्त दलित शोषण, दमन और अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करती हुई न विरोध कर रही

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

है बल्कि अन्याय का प्रतिशोध ले रही है। 'स्वाभिमान' कहानी की वीरबानी ने अपनी छोटी बहन पर बलात्कार करनेवाले दो राजपूत लडकों की हत्या कर प्रतिशोध लिया था। उसे अपने किये पर पछतावा नहीं उलटे वह स्वाभिमान से कहती है– "मैंने उन दोनों दरिंदो को मौत के घाट उतार दिया उन कुत्तों को तो मुझे पहले ही मार देना चाहिए था। अब मुझे जो भी सजा मिली कोई परवाह नहीं। ज्यादा से ज्यादा फाँसी होगी। फाँसी लगने तक मैं सम्मान से जिऊँगी। डरना मैंने कभी नहीं सिखा। जो करना था मैने किया।"[10]

सारांश :

हिन्दी कथा साहित्य में अभिव्यक्त नारी समस्त अभावों को झेलती हुई अपनी त्याग और समर्पण से न केवल खुद का उत्थान चाहती है बल्कि पुरे परिवार के सुख की कामना करती नजर आ रही है। नारी अपनी नारी सुलभ संवेदनाओं को संभालकर रखते हुए अपने सम्मान के लिए पुरूष मानसिकता को ललकारती एवं विद्रोह करती है। नारी त्याग और समर्पण से अपने परिवार को सुख को सुख और चैन की जिंदगी प्रदान करने की अभिलाषी है। वह समाज के साथ निर्भिड होकर स्वाभिमान की लड़ाई लड़ती है, हिंदी कहानी नारी के व्यक्तित्व के साथ–साथ उसपर होनेवाले बलात्कार, अत्याचार, और शोषण एवं विद्रोह को अभिव्यक्त करती है। भारतीय समाज व्यवस्था नारी को अबला समझकर उसपर जो अत्याचार होता है दैहिक जादा है अन्य रूपों में कम। हिन्दी कहानियों में नारी विद्रोह करनेवाली एवं पुरूष सत्ताक व्यवस्था में जुझनेवाली स्वाभिमान से जीवन जिनेवाली अभिलाषी नारी को चित्रित किया है। नारी में चेतना भरने का कार्य एवं महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

भारतीय परम्परा में जीवन व्यतित करनेवाली भारतीय पतिवृत्ता नारी हूब हूँ नजर आती है, जो पति, बच्चे परिवार अपनी संस्कृती की खातीर मोमबत्ती की जैसी जल रही है, औरों के लिए प्रकाश किरणे बिखेर रही है। जिसे अपने मिटने का न होश है, न कोई गम।

संदर्भ : – (1)तसलीमा नसरीन– नष्ट लडकी नष्ट गद्द, पृ.सं. 45(2)मृदुला गर्ग–बाहरी जन,(3)ममता कालिया की कहानियाँ–भाग 1, पृष्ठ सं. 378(4)मालती जोशी– दूसर दुनिया, साप्ताहिक हिन्दूस्तान, 30 मई 1982, पृ.क्र. 14(5)मृदुला गर्ग–रेशम, पृ.क्र.40(6)संपा.राजेंद्र यादव–हंस पत्रिका से, 2005.(7)मैत्रेयी पुष्पा–ललमनियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.क्र.111(8)मैत्रेयी पुष्पा–चिन्हार, आर्य प्रकाशन मंडल, नई दिल्ली, पृ.क्र.13(9)स्वरूप चंद्र गौतम–आजादी, समकालीन दलित कहानियाँ, सं.डॉ. कुसुम वियोगी, पृ.क्र.45(10)कर्मशील भारती–स्वाभिमान, हासिए से बाहर, रजतरानी, संपा. गाजियाबाद साहित्य संस्थान प्रकाशन, पृ.क्र.208.

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)